Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUG, 2019, VOL- 7/52

स्नातक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

सरोज बाला[1], Ph. D., शशिकांत यादव[2], Ph. D., & शशि यादव[3]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, डी. एस. कॉलेज, अलीगढ़,(उत्तरप्रदेश,भारत)

[2]प्रिंसिपल, स. बी. एम. टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, हजारीबाग, (झारखंड, भारत),

[3]शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, डॉ. भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, आगरा,(उत्तरप्रदेश,भारत)

Abstract

इस अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के महाविद्यालयों के 200 विद्यार्थियों (100 कला वर्ग के छात्र–छात्राओं तथा 100 विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं)पर किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकी विधि द्वारा किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है। जब यह अध्ययन कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राओं के संदर्भ में किया गया तो पाया गया कि कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों तथा कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्राओं की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

मुख्य शब्द: *धर्मनिरपेक्षता, अभिवृत्ति, स्नातक स्तर*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है और धीरे–धीरे समाज में बड़ा होकर सामाजिक नियमों को ग्रहण करके वह समाज का सदस्य बन जाता है। समाज में वह प्रेम, मिठास, ईर्ष्या, द्वेष, सुख–दुख का अनुभव करता है। समाज में उसे इन समस्याओं से इतर भी अन्य अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा इसके अतिरिक्त मनुष्य सामाजिक अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं से गुजरते हुए अपने भावी भविष्य की तरफ तत्परता से आगे बढ़ता जाता है। इस संसार में जो व्यक्ति अपने आप को सुख–दुःख में सामान्य रूप से स्थापित कर लेता है वही सच्चा व सफल व्यक्ति माना जाता है।

वर्तमान युग संघर्ष का युग है। जिधर भी हम दृष्टिपात करते हैं उधर समस्या ही समस्या नजर आती है। साथ ही बढ़ती धार्मिक–सामाजिक जटिलताओं और साम्प्रदायिकता ने मानव जीवन को दुष्कर बना दिया है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भारत एक धर्मनरिपेक्ष देश है यह कहना उतनी ही पुनरुक्ति होगी जितना यह कहना कि सूर्य नारायण पूर्व दिशा से उदित होते हैं परन्तु भारत की यह धर्मनिरपक्षेता किसी तारीख विशेष से या किसी अवधि के पूर्व या पश्चात् से नहीं शुरू होती है। इसकी जड़े भारत के सांस्कृतिक इतिहास से या यूँ कहें तो भारत की माटी से जुड़ी हुई है।

यह भारत की विविधता में एकता को साधने के प्रयास के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है। चाहे भारत की संहिताएँ रही हो, चाहे विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक सिन्धुघाटी की सभ्यता रही हो, ये सभी अपनी धर्मनिरपेक्ष छवि का हस्ताक्षर विश्व मानचित्र पर कर चुकी हैं । तभी तो जब **सी. एल.वेपर** अपनी पुस्तक की शुरूआत करते हैं तो यह स्वीकार करते है कि यूनान ने भले ही कितनी भी सुसंग राजनीतिक दर्शन दिया हो, भारत का राजनैतिक दर्शन पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष तथा सहिष्णु था। भारत का जीवन दर्शन अपने अंतःवासियों से अपेक्षा करता है कि वे जब कभी भी धर्म को संकट में देखे तो उसकी रक्षा हेतु अपने को अवतारी समझ आगे आये क्योंकि अधर्म वर्ग सुरक्षित हुआ तो साधु वर्ग असुरक्षित होगा और अगर साधु वर्ग असुरक्षित हुआ तो समाज का पतन सुनिश्चित है। गीताकार का यह आह्वान किसी धर्म विशेष के लिए नहीं अपितु न्याय, सदाचार, अपने कर्त्तव्य एवं धर्म की स्थापना का है।

स्मिथ के शब्दों में, ''धर्मनिरपेक्ष राज्य की धारणा भारतीय लोकतंत्र के भविष्य के लिए बड़ा ही महत्त्व रखती है। यह धारणा आधुनिक उदारवादी लोकतंत्र के आधारभूत और अविच्छेद तत्त्व के रूप में स्थिर रह सकती है अथवा गिर सकती हैं।''

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, ''धर्मनिरपेक्षता का अर्थ गैर–आध्यात्मिक, धर्म अथवा आध्यात्मिक मामलों से कोई सम्बन्ध न होना, कोई वस्तु जो धर्म से भिन्न हो, उसके विरूद्ध अथवा उससे सम्बन्धित न हो अथवा धार्मिक वस्तुओं से सम्बन्धित न हो और आध्यात्मिक तथा धार्मिक वस्तुओं के विपरीत सांसारिक हो।''

हमारे देश में बहुत से धर्म मानने वाले लोग रहते हैं, लेकिन इन सभी धर्मों को मानने वाले लोगों के मन में यदि एक दूसरे के प्रति आदर भाव नहीं होगा तो हम आज के इस संघर्ष पूर्ण युग में आगे नहीं बढ़ सकते हैं। परन्तु आज हम देखते हैं कि सभी धर्म विशेष कर हिन्दू–मुस्लिम आपस में नकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं एवं एक दूसरे से अपनी नकारात्मक अभिवृत्ति को दंगों के रूप में प्रदर्शित करते हैं।

एक बालक परिवार में जन्म लेता है और अपने परिवार के वातावरण का उस पर सम्पूर्ण प्रभाव पड़ता है। बालक परिवार से संस्कार ग्रहण करता है। यदि घर में सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रखा जाता है तो बालक में भी सभी धर्मों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास की संभावना होगी। बालकों के उचित मार्ग दर्शन से उनके दृष्टिकोण में उचित बदलाव द्वारा हम देश की एकता और अखण्डता को बनाये रख सकते है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

धर्मनिरपेक्षता राज्य एवं समाज को महत्व प्रदान करता है। समाज स्वयं में एक व्यापक संदर्भ है जो कि धार्मिक गतिविधियों को सम्मिलित करता है। धर्मनिरपेक्षता धार्मिक कर्मकाण्डों का विरोधी है लेकिन धार्मिक मूल्यों एवं दर्शन का विरोधी नहीं है अतः धर्मनिरपेक्षता सामाजिक चेतना का पूरक है।

आज भारतीय विद्यालयों में प्रायः शिक्षण सामग्री तथा सूचनाओं की कमी होने के कारण विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करना अपना कर्तव्य समझता है। उसका एक ही लक्ष्य रह गया है कि जीविकोपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त करें। इसी कारण आज का युवा अधूरी शिक्षा को लेकर रोजगार के लिए इधर–उधर भटक रहा है। साथ ही उसकी आवश्यकता की पूर्ति न होने के कारण विद्यार्थी पथभ्रमित होकर अवांछनीय कार्यों की ओर प्रेरित होता है, यह बात कभी भी नजर अंदाज नहीं की जा सकती है। वर्तमान में युवा वर्ग ही देश का कर्णधार है अतः नियमित रूप से कक्षा में देश–विदेश में होने वाली घटनाओं की जानकारी दें तथा यह जानने की कोशिश करें कि समस्या विशेष के प्रति विद्यार्थियों का क्या दृष्टिकोण है। वर्तमान समस्या में धर्म के आधार पर मानव समाज में अलगाववाद की भावना फैल चुकी है। मन्दिर मस्जिद के विवाद ने समाज में कटुता का बीज बो दिया है। जिसे दूर करना अति आवश्यक है। अतः इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने यह समस्या चुनी की स्नातक स्तर में अध्ययनरत् छात्र तथा छात्राओं में साम्प्रदायिकता की भावना का स्तर क्या है एवं इसे किस प्रकार से कम किया जा सकता है। इसके साथ ही स्नातक स्तर में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में धर्मनिरपेक्षता के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति क्या है?

समस्या कथन :

''स्नातक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है–

1. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।
3. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।

अध्ययन का सीमांकन :

- प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत जौनपुर जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक तृतीय वर्ष (कला एवं विज्ञान वर्ग) के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
- इस अध्ययन में 200 विद्यार्थियों (100 कला वर्ग तथा 100 विज्ञान वर्ग) को शामिल किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन 100 कला वर्ग के विद्यार्थियों (50 छात्र तथा 50 छात्राओं) एवं 100विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों (50 छात्र तथा 50 छात्राओं) तक सीमित रखा गया है।

शोध का अभिकल्प :

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जौनपुर जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक तृतीय वर्ष (कला एवं विज्ञान वर्ग) के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन का न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के चयन हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध के उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में धर्मनिरपेक्षता के मापन हेतु डॉ. आर. के. ओझा द्वारा निर्मित धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के चर :

1. स्वतंत्र चर : धर्मनिरपेक्षता स्वतंत्र चर है ।
2. आश्रित चर : अभिवृत्ति आश्रित चर है।
3. नियंत्रित चर : स्नातक स्तर के विद्यार्थी नियंत्रित चर है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी परीक्षण
4. सार्थकता स्तर

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन :

1. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन

सारणी संख्या 1.1: कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t–अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग के विद्यार्थी	100	152.34	37.16	1.40	0.288	1.97 df=198
2.	विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	100	153.74	31.31			

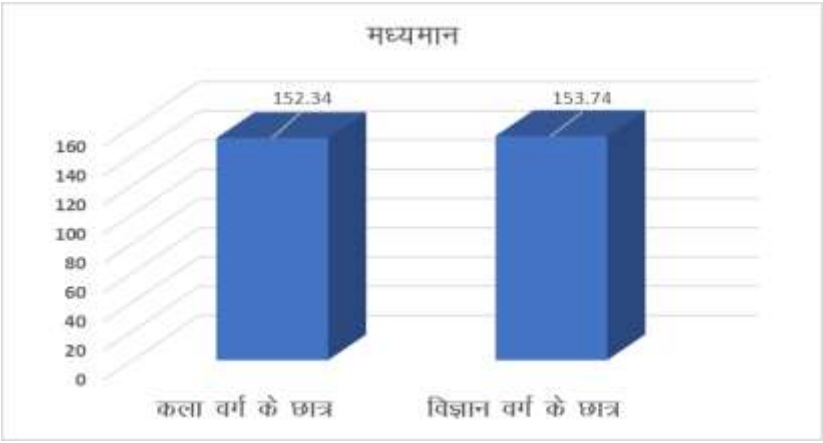

ग्राफ संख्या 1.1

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 152.34 एवं मानक विचलन 37.16 है तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 153.74 एवं मानक विचलन 31.31 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 0.288 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अतः परिणामतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

2. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन

सारणी संख्या 1.2: कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t–अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग के छात्र	50	152.56	35.57	0.86	0.130	1.98 df=98
2.	विज्ञान वर्ग के छात्र	50	153.42	30.27			

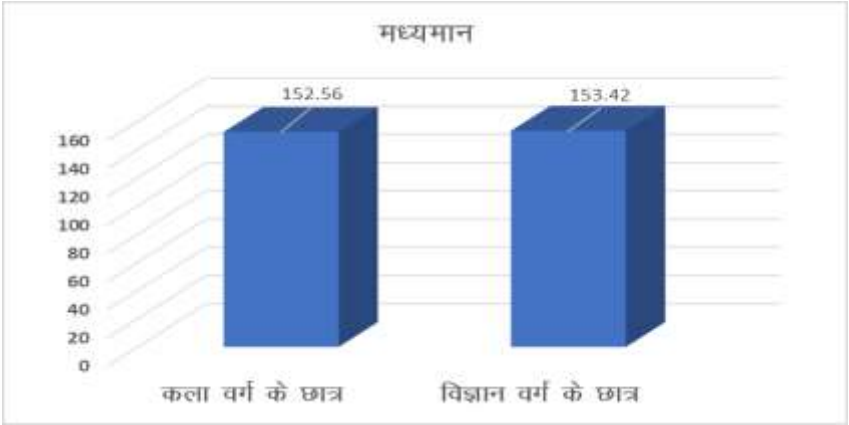

ग्राफ संख्या 1.2

सारणी संख्या 1.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 152.56 एवं मानक विचलन 35.57 है तथा विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 153.42 एवं मानक विचलन 30.27 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 0.130 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः परिणामतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

3. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्मनिपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारणी संख्या 1.3: कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t–अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग की छात्राएँ	50	152.56	38.68	1.38	0.193	1.98 df=98
2.	विज्ञान वर्ग की छात्राएँ	50	154.06	32.32			

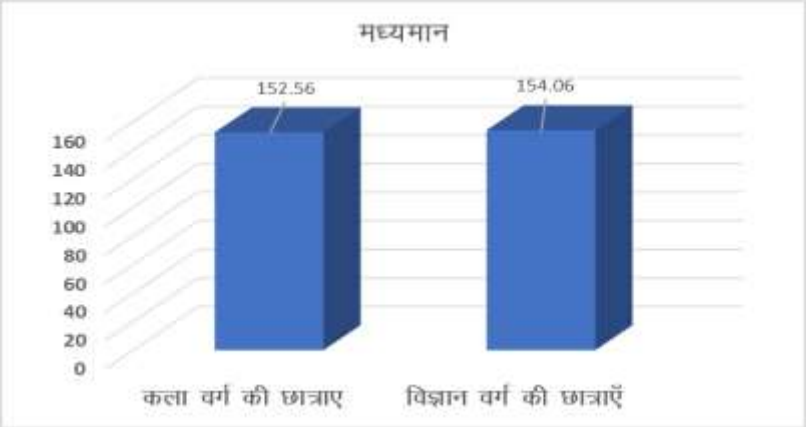

ग्राफ संख्या 1.3

सारणी संख्या 1.3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला वर्ग की छात्राओं का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 152.56 एवं मानक विचलन 38.68 है तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की धर्म

निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 152.06 एवं मानक विचलन 32.32 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 0.193 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः परिणामतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

शोध निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान पाई गई। (ग्राफ संख्या 1.1)

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान पाई गई। (ग्राफ संख्या 1.2)
3. स्नातक स्तर में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान पाई गई। (ग्राफ संख्या 1.3)

शोध के शैक्षिक निहितार्थ :

छात्रों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति इसलिए तटस्थ रहती है, क्योंकि छात्र छात्राओं की अपेक्षा समाज के बड़े भाग से मुखरित होते हैं और वे छात्राओं की अपेक्षा अन्य धर्मों के लोगों से अधिक सम्पर्क में होते हैं जबकि छात्रायें एक सीमित दायरे में रहती है। जिसके कारण छात्र एवं छात्राओं के सोच में अन्तर होता है। यही कारण है कि उनके धर्मनिरपेक्षता में भी अन्तर होता है जबकि सामाजिक चेतना दोनों समूहों में बराबर होने का कारण आज हमारे समाज में समानता तथा सौहार्द्ध होने के कारण दोनों समूहों को समान अवसर प्राप्त हो रहे हैं जिस कारण दोनों समूह समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमारी, रीमा (2010). *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता तथा समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण, वी0ब0 सिंह पू0वि0वि0 जौनपुर, अप्रकाशित शोध सं0 1323, पृ0सं0 126*

गोरा, एम0एस0 (1996). उद्धरत विपिन चन्द्र, (2005). *आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता एवं समाज का एक अध्ययन द्वितीय संस्करण , नेशनल बुक डिपों नई दिल्ली, पृ0 सं0 113–114*

चन्द्र, विपिन (2005). *आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता तथा समाजवाद का एक अध्ययन, द्वितीय संस्करण, नेशनल बुक डिपों, नई दिल्ली पृ0 सं0 77*

सिंह, कुलश्रेष्ठ (1986). *इफैक्टिवनेस ऑफ वैल्यू क्लासीफाइंग स्ट्रेटजी इन वैल्यू ओरिएण्टेशन ऑफ, बी0एड0 स्टूडेन्ट्स, अप्रकाशित शोध योजना, एन.सी.ई.आर.टी. (1986)।*

शर्मा, पी0सी0 (2006). *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन विधियाँ, इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन।*

शर्मा, ए0 एवं अग्रवाल, बी0एल0 (2002). *सोसियोमेट्री : ए हैण्डबुक फॉर टीचर्स एण्ड काउंसेलर्स, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।*

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies